International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 17-02-2025, Accepted: 18-03-2025, Published: 02-04-2025
Volume 11, Issue 2, 2025, Page No. 1-2

भक्ति काव्य में भारतीय ज्ञान परंपरा

डॉ. धर्मेंद्र कुमार शर्मा
हिन्दी विभाग, भाषा अध्ययनशाला, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

सारांश
भारतीय ज्ञान परंपरा एक दिव्य प्रकाशपुंज के समान है, जिसकी आभा भक्ति काव्य में निखरकर लोकचेतना को आलोकित करती है। वेदों की गंभीरता, उपनिषदों की रहस्यात्मकता और पुराणों की सांस्कृतिक गरिमा जब संत कवियों की वाणी में प्रवाहित हुई, तो भक्ति काव्य प्रेम, भक्ति और ज्ञान का सजीव संगम बन गया। कबीर के दोहों में आत्मज्ञान की ज्वाला प्रज्वलित होती है, तुलसीदास की चौपाइयों में धर्म और नीति का सुगंधित समर्पण मिलता है, सूरदास के पदों में भक्ति की माधुरी रसधारा बनकर बहती है, और मीरा के भजनों में प्रेम का निर्मल स्रोत अनवरत प्रवाहित होता है। इस काव्यधारा ने ज्ञान को केवल ग्रंथों तक सीमित न रखकर लोकभाषाओं में उतारा, जिससे समाज में समरसता, आध्यात्मिकता और नैतिकता का दिव्य आलोक प्रस्फुटित हुआ। इस शोध–पत्र में भक्ति काव्य में भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध आयामों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

मूल शब्दः भक्ति काव्य, भारतीय ज्ञान परंपरा, वेदांत, कर्म सिद्धांत, अद्वैतवाद, निर्गुण भक्ति, सगुण भक्ति, तुलसीदास, सूरदास, कबीरदास, मीरा बाई, नीति, मोक्ष, प्रेम मार्ग, आत्मसमर्पण।

भारतीय ज्ञान परंपरा अनादिकाल से समाज, संस्कृति, दर्शन और साहित्य को गहराई से प्रभावित करती आई है। वेदों, उपनिषदों, पुराणों, रामायण, महाभारत, बौद्ध और जैन ग्रंथों से लेकर भक्ति और सूफी काव्य तक यह परंपरा सतत प्रवाहित होती रही है। विशेष रूप से भक्ति काव्य इस परंपरा का एक सशक्त माध्यम बना, जहाँ काव्यात्मक अभिव्यक्ति के साथ–साथ गूढ़ दार्शनिक और नैतिक सिद्धांतों का समावेश दृष्टिगत होता है।

भक्ति काव्य के संत कवियों ने इस परंपरा को सरल और आत्मीय भाषा में जनमानस तक पहुँचाया और समाज को धर्म, अध्यात्म, नैतिकता और भक्ति के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। संत कवियों की यह परंपरा आज भी काव्य और समाज में एक अमूल्य धरोहर के रूप में जीवित है।

भारतीय ज्ञान परंपरा ने भक्ति काव्य को गहरे रूप से प्रभावित किया। इस परंपरा का मुख्य आधार आत्मा और परमात्मा के बीच संबंध, अद्वैतवाद, कर्म और भक्ति का समन्वय था। भक्ति काव्य के कवियों ने भारतीय ज्ञान परंपरा के तत्वों को सरल भाषा में प्रस्तुत किया, जिससे सामान्य जनमानस को धर्म, आध्यात्मिकता और नैतिक मूल्यों का बोध हुआ।

कबीरदास ने निर्गुण भक्ति और अद्वैतवाद का समर्थन किया। उनके दोहों में भारतीय ज्ञान परंपरा की गहरी छाप देखी जा सकती है।

''माला फेरत जुग भया, गया न मन का फेर।
कर का मन का डारि के, मन का मनका फेर।।''

इस दोहे में कबीरदास ने बाह्य आडंबर छोड़कर आंतरिक साधना पर बल दिया है, जो भारतीय ज्ञान परंपरा का एक महत्वपूर्ण तत्व है। कबीर ने भक्ति को केवल बाहरी कर्मकांड से मुक्त करके आत्मिक शुद्धता के रूप में देखा। गुरु का स्थान हमारी संस्कृति में सबसे ऊपर है। गुरू पथ प्रदर्शक होता है। वह अंधेरे से उजाले की ओर ले जाने वालाहोता है। भक्तिकाल के सभी कवियों ने इस मत को स्वीकार किया है। कबीरदास जी ने लिखा है कि –

''गुरु गोबिन्द दोऊ खड़े, काके लागू पाय।
बलिहारी गुरू आपकी, जिन गोबिन्द दियो मिलाय।।''

निःस्वार्थ भावना से किया गया कार्य धर्म स्वरूप और परोपकार ही है। यह भावना हमारे नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा करती है।सज्जन व्यक्ति का साथ कभी दुखदायी नहीं हो सकता, वह जीवन में विश्वास और सप्रेरणा देने वाला ही साबित होता है। तो कुसंगति दुर्गुणों और दुष्प्रवृत्तियों की ओर धकेलने वाली होती है। भक्त कवियों ने सत्संगति की प्रसंशा और कुसंगति की निन्दा की है। 'सत्संगति' को सभी भक्त कवियों ने एक आदर्श मूल्य के रूप में स्थापित किया है।

भक्ति काव्य में परोपकार की भावना भारतीय जीवन मूल्यों एवं आदर्शों का पवित्र रूप है। परोपकार की भावना भारतीय जन मानस में गहरी है। तुलसीदास जी कहते हैं कि–

''परहित सरिस धर्म नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।''

तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में भारतीय ज्ञान परंपरा को व्यापक रूप से प्रस्तुत किया। वेदांत और कर्म सिद्धांत उनके काव्य में प्रमुख रूप से दिखाई देते हैं।

''करम प्रधान विश्व करि राखा।
जो जस करहि सो तस फल चाखा।।''

यह चौपाई कर्म सिद्धांत को प्रतिपादित करती है, जो भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल आधार है। तुलसीदास ने भक्ति के माध्यम से मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया और राम को ईश्वर का सगुण स्वरूप मानते हुए उनके चरित्र को आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया। उनके काव्य में वेदों और उपनिषदों के सिद्धांतों का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

सूरदास की रचनाएँ मुख्यतः कृष्ण भक्ति पर आधारित हैं। उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा के भक्तियोग और प्रेम मार्ग को अभिव्यक्त किया।

''सुनि परमित पिय प्रेम की, चातक चितवति पारि।
घन आशा सब दुख सहै, अंत न याँचौ वारि।।''

प्रिय के प्रेम के या परिणाम की महत्ता को जानकर या सुनकर पपीहा बादल की ओर निरंतर देखता रहता है। उसी मेघ की

आशा से सब दुःख सहता है पर मरते दम तक भी पानी के लिए प्रार्थना नहीं करता।
इस कविता में कृष्ण लीला का वर्णन करते हुए भक्ति की सहजता और प्रेम भाव को प्रकट किया गया है।

''जिन जड़ ते चेतन कियो, रचि गुण तत्व विधान।
चरन चिकुर कर नख दिए, नयन नासिका कान।।''

जिस ईश्वर ने सत्व, रज, तम इन तीन गुणों तथा पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश इन पाँच तत्वों के द्वारा जड़ से चेतन बना दिया और हाथ, पाँव, आँख, नाक, बाल और नाखून दिए (बड़े दुःख की बात है मनुष्य उसके गुणों का स्मरण नहीं करता)।
सूरदास के काव्य में भागवत पुराण की शिक्षाएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं, जहाँ भक्ति को सर्वोच्च साधना बताया गया है। सूरदास का काव्य केवल भक्ति भावना तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें भारतीय ज्ञान परंपरा के गहरे तत्व भी समाहित हैं। वेद, उपनिषद, भगवद गीता और भक्ति आंदोलन की शिक्षाएँ उनके काव्य में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती हैं। उनका साहित्य हमें सत्य, प्रेम, कर्तव्य, संतोष और परोपकार जैसे नैतिक मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा देता है। इस प्रकार, सूरदास का काव्य भारतीय ज्ञान परंपरा का एक अमूल्य रत्न है।
मीरा बाई की रचनाएँ भारतीय ज्ञान परंपरा के समर्पण और प्रेम मार्ग की परिचायक हैं। उन्होंने ईश्वर को प्राप्ति का साधन केवल प्रेम और भक्ति को माना है।

दरस बिन दूखन लागे नैन।
जब तें तुम बिछुरे पिव प्यारे,
कबहुँ न पायो चैन।।

मीरा बाई का भक्ति भाव भारतीय ज्ञान परंपरा के आत्मसमर्पण के सिद्धांत को प्रकट करता है। उनकी रचनाओं में श्रीमद्भगवद्गीता की भक्ति भावना का प्रभाव दिखाई देता है, जिसमें निष्काम प्रेम और आत्मार्पण को मोक्ष का साधन बताया गया है।
भक्ति काव्य केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति नहीं था, बल्कि इसमें भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्वपूर्ण तत्व समाहित थे। इस काव्य में वेदांत, कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग, नीति और धर्म के गूढ़ संदेश छिपे हुए थे। संत कवियों ने आत्मा और परमात्मा के एकत्व को महत्व दिया, जो उपनिषदों की शिक्षाओं से प्रभावित था।
तुलसीदास, कबीरदास और अन्य संतों ने कर्म को जीवन का मुख्य आधार बताया, जो गीता के सिद्धांतों से मेल खाता है।संत कवियों ने समाज सुधार को ध्यान में रखते हुए नैतिकता, प्रेम, दया, करुणा और सहिष्णुता का संदेश दिया, जो भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल तत्व हैं।

निष्कर्ष

भक्ति काव्य भारतीय ज्ञान परंपरा का एक सशक्त माध्यम रहा है। यह स्पष्ट होता है कि भक्ति काव्य केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारतीय ज्ञान परंपरा का संवाहक भी है। भक्तिकाल के संत कवियों ने इस परंपरा को सरल भाषा में प्रस्तुत किया और इसे जनमानस तक पहुँचाया। यह परंपरा आज भी हिंदी काव्य को समृद्ध कर रही है और आधुनिक युग में भी इसकी प्रासंगिकता बनी हुई है।

संदर्भ सूची

1. रामचरितमानस – तुलसीदास
2. सूरसागर – सूरदास
3. साखी और दोहे – कबीरदास
4. गीतांजलि – रविंद्रनाथ टैगोर
5. श्रीमद्भगवद्गीता – व्यास